शुक्पा एवं औषधीय पौधों की नर्सरी और पोधरोपण तकनीक विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की रिपोर्ट

Report of one day training program on nursery and plantation techniques of Shukpa and medicinal plants

भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने शुक्पा एवं औषधीय पौधों की नर्सरी और पोधरोपण तकनीक विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन ताबो में 20 सितम्बर, 2024 को किया। इस अवसर पर डॉ॰ जगदीश सिंह, वैज्ञानिक-जी ने कहा कि प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य शुप्का औषधीय पौधों की खेती की जानकारी वन विभाग के कर्मचारियों तथा हितधारकों तक पहुंचाना है, ताकि वो पौधे उगा सके तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम की जानकारी ज्यादा से ज्यादा लोगों तक़ पहुंचाए। उन्होंने किसानों को औषधीय पौधे उगाने के लिए प्रोत्साहित किया। इस कड़ी में आगे उन्होंने कहा कि जंगलों में औषधीय पौधों का संरक्षण जरूरी है और हिमालयी क्षेत्र में औषधीय पौधों के संरक्षण के लिए वैज्ञानिक तकनीकों के माध्यम से वैज्ञानिक खेती करने की आवश्यकता है। उच्च मूल्य वाले औषधीय पौधों की व्यावसायिक खेती करके इसे एक स्थायी आय सृजन गतिविधि के रूप में बनाने की बहुत संभावना है। इन मूल्यवान औषधीय पौधों की रक्षा और संरक्षण का एकमात्र तरीका उनका कृषिकरण है। औषधीय पौधों की खेती विविधिकरण एवं अतिरिक्त आय के लिए अच्छा विकल्प है। उन्होंने आगे बताया कि संस्थान द्वारा बागवानी पौधों के साथ-साथ औषधीय पौधों जैसे कि चोरा, सलाम मिस्री, कडु को अंतरवर्तीय फसल उगाने के मॉडल विकसित किए हैं, जिससे किसान बागवानी फसल के मध्य बचे भाग का उपयोग औषधीय पौधों को उगाने के लिए कर सकते हैं और इन्हे उगाकर अतिरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं। डॉ पीतांबर सिंह नेगी, वैज्ञानिक-डी, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने शुक्पा (*Juniperus polycarpos*) की नर्सरी और पोधरोपण तकनीक के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने आगे बताया कि शुक्पा शीत रेगिस्तान की परिस्थितिकी के लिए बहु उपयोगी पौधा है। परंतु इस प्रजाति को उगाना मुश्किल है संस्थान ने पिछले दस वर्षों मे गहन शोध किया इसकी नर्सरी तथा तकनीक पहली बार विकसित की है तथा प्रशिक्षण के माध्यम से हितधारकों तक पहुंचाई। संस्थान ने लेह लदाख तथा स्पीति मे जूनीपर पर प्रशिक्षण दिया तथा इस दौरान जूनिपर के पौधे विकसित किए। उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि लोग शुक्पा के पौधे जरूर लगाए क्योंकि इस क्षेत्र के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण प्रजाति है। अगर किसी भी तरह की तकनीक की जरूरत होगी तो संस्थान अवश्य तकनीकी सहयोग करेगा। इसके अलावा डॉ नेगी ने भोजपत्र (*Betula utilis*) के बीज एवं नर्सरी तकनीक के बारे में प्रशिक्षार्थियों को विस्तृत जानकारी दी। डॉ. जोगिंदर सिंह, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने हिमालय क्षेत्र के महत्वपूर्ण औषधीय पौधो की पहचान एवं उनके पारंपरिक उपयोग की जानकारी साझा की। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र के लिए

रतनजोत, वनककड़ी, कडु, सालमपंजा, धूप, डेल्फिनियम, इत्यादि महत्वपूर्ण है, इन पौधो की बाज़ार में अच्छी मांग है। उन्होंने इन महत्वपूर्ण औषधियों पौधों के उपयोग के बारे मे भी बताया। श्री ओम शक्ति बोध, संगीत अध्यापक, शेर्पा ताबो ने अपने विद्यालय की तरफ से गोकपो के साथ स्थानीय लोकगीत की प्रस्तुति दी। इसी कड़ी में प्रशिक्षणार्थियों को वन अनुसंधान केंद्र, ताबो में स्थापित शुक्पा प्रदर्शन पौधरोपण क्षेत्र का दौरा करवाया गया, जहां उन्हें प्रेक्टिकल जानकारी दी गयी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में वन विभाग के कर्मचारी, शेरकोंग विद्यालय ताबो के अध्यापक, छात्र एवं ताबो क्षेत्र के आसपास सहित 35 लोग प्रशिक्षण में शामिल हुए। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन डॉ॰ जोगिंदर चौहान, मुख्य तकनीकी अधिकारी के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

Media Coverage

शीत रेगिस्तान में औषधीय पौधे उगाने का दिया प्रशिक्षण

ताबो में प्रशिक्षण कार्यक्रम में मौजूद वन विभाग के कर्मचारी व ग्रामीण। संवाद

ताबो में पौधरोपण तकनीक की जानकारी देते वैज्ञानिक। संवाद

ताबो में पौधों की नर्सरी और पौधरोपण तकनीक पर किसानों को दिया प्रशिक्षण

काजा (लाहौल-स्पीति)। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद और हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने ताबो में शुक्रवार को शुक्पा और औषधीय पौधों की नर्सरी और पौधरोपण तकनीक विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

इस अवसर पर वैज्ञानिक डॉ. जगदीश सिंह ने किसानों को औषधीय पौधे उगाने के लिए प्रोत्साहित किया। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के वैज्ञानिक डॉ. पीतांबर सिंह नेगी ने शुक्पा की नर्सरी और पौधरोपण तकनीक के बारे में जानकारी दी। उन्होंने आगे बताया कि शुक्पा शीत रेगिस्तान की परिस्थितिकी के लिए बहु उपयोगी पौधा है, लेकिन इस प्रजाति को उगाना मुश्किल है।

संस्थान ने पिछले दस वर्षों मे गहन शोध किया और इसकी नर्सरी और तकनीक पहली बार विकसित की है। संस्थान ने लेह-लद्दाख और स्पीति में जूनिपर पौधे उगाने पर प्रशिक्षण दिया। इसके अलावा डॉ. नेगी ने भोजपत्र के बीज और नर्सरी तकनीक के बारे में प्रशिक्षार्थियों को जानकारी दी ।

इसके अलावा मुख्य तकनीकी अधिकारी जोगिंदर सिंह ने हिमालय क्षेत्र के महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की पहचान और उनके पारंपरिक उपयोग की जानकारी साझा की। संगीत अध्यापक शेर्पा ताबो ने अपने विद्यालय की तरफ से गोकपो के साथ स्थानीय लोकगीत की प्रस्तुति दी। इसी कड़ी में शिक्षार्थियों को वन अनुसंधान केंद्र, ताबो में स्थापित शुक्पा प्रदर्शन पौधरोपण क्षेत्र का दौरा करवाया गया।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में वन विभाग के कर्मचारी शेरकोंग विद्यालय ताबो के अध्यापक, छात्र एवं ताबो क्षेत्र के आसपास सहित 35 लोग प्रशिक्षण में शामिल हुए । संवाद

ताबो में शुक्पा-औषधीय पौधों की नर्सरी पोधरोपण की दी ट्रेनिंग

जिला संवाददाता-कैलांग

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद व हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने शुक्पा एवं औषधीय पौधों की नर्सरी और पौधारोपण तकनीक विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम ताबों करवाया। इस दौरान वैज्ञानिक डा. जगदीश सिंह ने कहा कि प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शुष्क औषधीय पौधों की खेती की जानकारी वन विभाग के कर्मचारियों व हितधारकों तक पहुंचाना है, ताकि वह पौधे उगा सकें। उन्होंने किसानों को औषधीय पौधे उगाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने बताया कि संस्थान द्वारा बागबानी पौधों के साथ-साथ औषधीय पौधों जैसे कि निहानी, चोरा सलाम मिश्री, कड़ को अंतरवर्तीय फसल उगाने के मॉडल विकसित किए हैं जिससे किसान बागबानी फसल के मध्य बचे भाग का उपयोग औषधीय पौधों को उगाने के लिए कर सकते हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में वन विभाग के कर्मचार, शेरकोंग विद्यालय ताबों के अध्यापक एवं छात्र व ताबो क्षेत्र के आसपास के लोगों सहित सहित 35 लोग प्रशिक्षण में शामिल हुए। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के वैज्ञानिक डा. पीतांबर सिंह नेगी ने शुक्पा की नर्सरी और पौधरोपण तकनीक के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया किसंस्थान ने पिछले दस दस वर्षों में गहन शोध किया। इसकी नर्सरी व तकनीक पहली बार विकसित की है तथा प्रशिक्षण के माध्यम से हितधारकों तक पहुंचाई। इस दौरान जूनिपर के पौधे विकसित किए। मुख्य तकनीकी अधिकारी डा. जोगिंद्र सिंह ने हिमालय क्षेत्र के महत्वपूर्ण औषधीय पौधो की पहचान एवं उनके पारंपरिक उपयोग की जानकारी साझा की।

****